आज की मुरली का सार -

आज बापदादा अलग-अलग पार्टीओ से मिलते, हरेक को अलग-अलग ज्ञान का पाइन्ट अपने में चेक करने को कहा. हम एक-एक पाइन्ट को रिवाईज करते खुद में सच्चाई-सफाई से चेक करेंगे की हमने कहा तक ये ज्ञान की पाइन्ट अपने में धारण की हे?

1. सदा स्वयं को हर कर्म करते हुए तन के भी, धन के भी, प्रवृति के भी ट्रस्टी समझ कर चलते हो?

- ट्रस्टी की विशेषता हे, ट्रस्टी अर्थात नष्टोमोहा.
- मेरा पन समाप्त. शरीर, साधन या सम्बन्ध कुछ भी मेरा नहीं.
- मेरा को तेरा में परिवर्तन किया हो.
- सब में बाबा-बाबा.

स्वमान -- में संपूर्ण ट्रस्टी आत्मा हूँ.

2. स्वयं को सदा मधुबन वासी समझते हो?

मधुबन की विशेषता हे जहाँ का हर निवासी के जीवन में मिठास होती हे, खुशी होती हे, क्योंकि एक-दूसरे के प्रति आत्मिक भाव सहज होता हे. मधुबन निवासी माना सहज ओर निरंतर योगी. अपने घर को सेवास्थान समझ मन-बुद्धि से जब चाहो तब मधुबन पहुँच जाओ तो सदा बाप के साथ का अनुभव करेंगे ओर सदा खुशी में रहेंगे.

स्वमान -- में सदा मधुबन निवासी, बाबा की गोद में पलने वाली आत्मा हूँ.

3. स्वयं चेक करो की जब किसी भी प्रकार का पेपर आता हे तो हम घबरा जाते हे?

हर क्वेश्चन पेपर को पास करने का साधन हे फुलस्टोप. फुलस्टोप देने वाला फुल पास होगा क्योंकि फुलस्टोप हे बिंदी की स्टेज. ओरो का देखते हुवे भी न देखो, सुनते हुवे भी न सुनो. बाप का सुनाया हुआ सुनो, बाप ने जो दिया हे वह देखो. इस प्रैक्टिस से फुलपास होंगे.

पास होने की निशानी हे - चढ़ती कला का अनुभव करेंगे. अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते रहेंगे. सर्वप्राप्तिओ का अनुभव करते रहेंगे.

स्वमान - सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है.

4. स्वयं को चेक करो, हम संतुष्टमणी आत्मा हे?

सदा बाप की याद में रहनेवाले हर परिस्थिति में भी संतुष्ट रहेंगे. दुख कि परिस्थिति में सुख कि स्थिति एकरस हो. नथिंग न्यू की नोलेज से पहाड़ जैसी परिस्थिति भी राई समान अनुभव होगी. ऐसी संतुष्टमणी आत्मा को बाप भी याद करते हे.

स्वमान - में संपूर्ण संतुष्टमणी महावीर आत्मा हूँ.

5. स्वयं को पदमापदम भाग्यशाली आत्मा समझते हो?

जो गायन हे कोटों में कोई, कोई में भी कोई यह हम आत्माओं का गायन हे क्योंकि साधारण रूप में आये हुए बाप को ओर बाप के कर्तव्य को जानना, ये कोटों में कोई का पार्ट हे. जान लिया, मान लिया ओर पा लिया. जिसको ढूँढते थे उसको पा लिया. भगवान ने मुझे अपना बनाया, इस खुशी में रहो तो कही भी आंख नहीं डुबेगी. बाप मिला सबकुछ मिला, ये सबसे बड़ी खुशी है, इसी खुशी में मन से नाचते रहो.

स्वमान - स्वयं भगवान ने मुझे अपना बनाया, ऐसी कोटों में कोई, में पदमापदम भाग्यशाली आत्मा हूँ.

6. स्वयं को खुशनसीब समझते हो?

सारे विश्व में सबसे श्रेष्ठ नसीब अर्थात तकदीर हमारी हे. हमारे जैसा खुशनसीब ओर कोई नहीं हो सकता. बाप ने स्वयं आकर अपना बनाया - इस भाग्य का वर्णन करते सदा खुशी में नाचते रहो. हम आत्माओं का नसीब अविनाशी हे. जो स्वप्न में भी नहीं था वह प्राप्ति हो गई, बाप मिला सब कुछ मिला. इसी खुशी में नाचते रहो तो सदा सामर्थी स्वरूप रहेंगे.

स्वमान -- में श्रेष्ठ नसीब वाली आनन्द स्वरूप आत्मा हूँ.

7. स्वयं को सच्चे ब्राह्मण या ऊंची स्थिति वाले अनुभव करते हो?

सबसे श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन गाया हुआ हे, ब्राह्मणों का नाम भी ऊंचा, काम भी ऊंचा तो स्थिति भी ऊंची. ऊंचे ते ऊंचे बाप ओर ऊंचे ते ऊंचे बच्चे. ऐसी ऊंची स्मृति में रहने से कर्म ओर संकल्प ओटोमेटिक ऊंचे रहेंगे. योग अग्नि से पुराने खाते को भस्म करो. संगम पर पूरना भस्म ओर नया चालू करना हे. पूरना भस्म होगा तब ही खुशी का अनुभव करेंगे ओर सदा समर्थ बन जायेंगे.

स्वमान -- में पूरषोतम संगमयुगी श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ.

8. स्वयं चेक करो, चुकतु करते समय जमा करते हो?

संगमयुग में आत्मा के गुणों ओर शक्ति जमा करने का, प्राप्तिओ का युग हे. इस समय जब हम चुकतु करते हे तो उसमें भी प्राप्ति का अनुभव हो, इसकी विधि हे याद में रहकर चुकतु करो या ट्रस्टी बनकर चुकतु करो तो चुकतु करते समय भी जमा करने का अनुभव होगा.

स्वमान -- में हर कदम में पदमो की कमाई जमा करनेवाली अनुभवमुर्त आत्मा हूँ.

ॐ शांति.